ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) (A

Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हर शोध देता है नये परिवर्तन की प्रेरणा : डॉ. शंभू गुप्त

हिंदी विश्वविद्यालय में शोध-प्रविधि पर आयोजित संगोष्ठी में 31 शोधपत्र प्रस्तुत

विचार प्रस्तुत करते हुए डॉ. शंभू गुप्त। मंच पर दाएं से डॉ. मोदी, प्रो. मनोज कुमार, डॉ. सिद्दीकी, डॉ. प्रसाद।

वर्धा दिनांक 31 अगस्त 2012 : किसी भी शोध में परिवर्तन एक अहम उद्देश्य होता है। शोध के लिए शोधार्थी के अंदर संवेदना होनी चाहिए। हर शोध एक नये परिर्वन की दिशा और प्रेरणा प्रदान करता है। उक्त उदबोधन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के स्त्री अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. शंभू गुप्त ने दिये। वे हिंदी विश्वविद्यालय में शोध-प्रविधि : स्वरूप और सिद्धांत विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के तिसरे दिन के प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार रख रहे थे। उन्होंने कहा कि शोध-प्रविधि को शोध-प्रविधि से नहीं बल्की शोध दृष्टी के नाम से कहा जाना चाहिए। शोध में आत्मियता, अपनापन और दृष्टि का होना एक अनिर्वाय शर्त है। सत्र की अध्यक्षता संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने की । इस अवसर पर अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. डी. एन. प्रसाद

This document was created using Smart PDF Creator
To remove this message purchase the product at www.SmartPDFCreator.com

तथा अनुवाद एवं निर्वाचन विद्यापीठ के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनवर सिद्दीकी वक्ता के रूप में उपस्थित थे।

प्रारंभ में अवलोकन डॉ. डी. एन. प्रसाद ने 'अकादमिक अनुसंधान का व्यवहारिक आप्लावन' विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि शोध का काम विश्लेषण की क्षमता विकसित करना है। हम मिट्टी से ईंट बनाते है तो यह भी एक रिसर्च है। पेड की लकडी से हम टेबल, चेयर बनाते है यह रिसर्च की श्रेणी में आता है। डॉ. सिद्दीकी ने शोध को एक गंभीर साधना की संज्ञा दी। उन्होंने कहा कि शोधकर्ता को कल्पना की आखों से दूरदर्शी होना चाहिए। अध्यक्षीय उद्बोधन प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि अनुसंधान में सही है और यही सही है ऐसा नहीं होना चाहिए।

This document was created using Smart PDF Creator
To remove this message purchase the product at www.SmartPDFCreator.com

अनुसंधान में हमेशा गुजांइश का अवसर बना रहता है। सत्र का संचालन डॉ. नृपेन्द्र प्रसाद मोदी ने किया। इस अवसर पर डॉ. श्री रमन मिश्र, राकेश मिश्र, राजेश यादव, अशोक मिाश्र, अनिर्बाण घोष, चित्रा माली, संदीप सपकाले, डॉ. विधु खरे दास, डॉ. प्रवीण वानखेडे, सुमन गुप्ता, धनजंय सोनटक्के सहित शोधार्थी तथा विद्यार्थी उपस्थित थे। इस सत्र में विभिन्न स्थानों से आये शोधार्थी तथा प्रतिभागीयों ने प्रपत्र वाचन किया।

संगोष्ठी में उपस्थित शोधार्थी तथा प्रतिभागी।

संस्कृति विद्यापीठ के शोधार्थी संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र विवेक कुमार जायसवाल ने सामाजिक शोधों में भाषा का सवाल विषय पर, अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के शोधार्थी पंकज कुमार सिंह ने संकलित आंकड़ों की संदर्भ सूची : ए.पी.ए. पद्धति विषय पर, मानवविज्ञान विभाग के शोधार्थी शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने वैज्ञानिक पद्धति का आगमन : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य विषय पर, प्रदीप त्रिपाठी, संचार एवं

मीडिया अध्ययन केंद्र के शोधार्थी बच्चा बाबु ने आकड़ों के प्रबंधन और विश्लेषण में एस.पी.एस.एस. की भूमिका विषय पर, अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग की शोधार्थी अर्चना पाठ्या ने शोध के संदर्भ की आवश्यकता, प्रासंगिकता, प्रमाणिकता के प्रश्न विषय पर, अनुवाद विभाग के शोधार्थी राजेश मून ने परस्पेक्टिव ऑफ साइंटिफिक अॅड मोरल रिसर्च मेथड विषय पर, अहिंसा एवं शांति अध्ययन के शोधार्थी जगदीश जवादे ने सामाजिक शोध में उपकल्पना की प्रासंगिकता विषय पर, अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के शोधार्थी अखिलेश कुमार उपाध्याय ने शोध सामग्री का संकलन : प्रेक्षण पद्धति विषय पर, स्त्री-अध्ययन विभाग के शोधार्थी राजकुमार ने आंकड़ों के संकलन की तकनीकें विषय पर, स्त्री अध्ययन विभाग की शोधार्थी चित्रालेखा ने नारीवादी शोध प्रविधि विषय पर, दलित एवं जनजाति अध्ययन के शोधार्थी किरन कुंभारे ने शोध-विषय का चयन तथा शोधार्थी विषय पर, भाषा-प्रौद्योगिकी विभाग के सत्येन्द्र कुमार ने कोशीय अर्थविज्ञान और संगणक विषय पर, नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग के हिमांशु नारायण ने विज्ञापन के क्षेत्र में शोध प्रविधि की महत्व विषय पर, साहित्य विभाग की सूर्या ई.वी. ने शोध-विषय के चयन में शोधार्थी एवं शोध-निर्देशक का दायित्व विषय पर, स्त्री-अध्ययन विभाग की रेणू कुमारी ने अंतरानुशासनिक शोध प्रविधि-उद्देश्य एवं महत्व विषय पर, अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के नलिन कुमार मंडल ने तथ्यों की बहुलता और उचित दृष्टिकोण का सवाल विषय पर, अरविंद रावत, सदानंद कुमार चौधरी ने आकडा सकंलन की तकनीकें : पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के परिप्रेक्ष्य विषय पर, मोहिनी गवई ने मानवशास्त्र में क्षेत्र कार्य प्रविधि की रूपरेखा विशेष संदर्भ : वारली जनजाती विषय पर, अस्मिता राजुरकर ने नारीवादी शोध प्रविधि में प्रश्नावली विषय पर, अरविंद कुमार उपाध्यक्ष ने साहित्यिक शोध के प्रकार विषय पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये।

बी. एस. मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी

This document was created using Smart PDF Creator
To remove this message purchase the product at www.SmartPDFCreator.com